# गौतम बुद्ध महाविद्यालय

सम्बद्ध-सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

पचपेड़वा, सांगठ, संतकबीर नगर (उ.प्र.)

**(शिक्षा संकाय)**

गौतम बुद्ध महाविद्यालय
पचपेड़वा, संतकबीर नगर (उ.प्र.)

## पाठ्य योजना - 1

सत्र : 2024...-2025..

शिक्षा में नाटक, कला और संगीत



छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका का नाम मोहम्मद अहमद

शिक्षण विषय : Dram, Art and Music in Education

महाविद्यालय अनुक्रमांक

विश्वविद्यालय द्वारा आवंटित अनुक्रमांक 0031

Roll of movies and media in Addressing on Education / Social Problems.

**Roll of movies** — आज फिल्में मनोरंजन के प्रमुख साधनों मे से एक है।

हिन्दी सिनेमा के जनक दादा साहब फाल्के ने 1913ई० में प्रमुख प्रथम भारतीय फिल्म राजा हरिश्चन्द्र का निर्माण किया है।

वर्तमान समय में सिनेमा का प्रभाव समाज के रहन - सहन के तरीके सोच व नजरिये सब पर पड़ता था। सर्व विदित है कि सिनेमा शिक्षा एंव समाज दोनों को प्रभावित करती है। फिल्में मनोरंजन के साथ जीवन के विभिन्न पहलुओं के बदलते परिवेश के साथ चित्रित किया जाता है। फिल्मों की एक विशेषता यह है कि वह जीवन के हर संवेदना को दर्शाता है, इसके माध्यम से वह सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना को जगाने का प्रयास भी किया जाता है।

वर्तमान समय में व्याप्त फिल्मों में समाजिक, असमानता, अन्याय, समाज में व्याप्त अन्य बुराई आतंकवाद, वैज्ञानिक कल्पनायें भ्रष्टाचार पर फिल्मांकन कर जाता जनता में इसके प्रति जागरूकता उत्पन्न किया।

शिक्षा तथा स्वच्छता पर कई फिल्में आई जिन्होंने समकालीन भारतीय समाज में समस्याओं को देश के पटल पर रखा।

→ प्रकाश झा द्वारा निर्देशित फिल्म आरक्षण जिसमें देश के सामाजिक तथा शैक्षिक स्थित में आरक्षण के पक्ष पर और विपक्ष में चर्चा की गयी।

→ फिल्म उन्श्री इडियट्स मे आधुनिक शिक्षा में व्याप्त बुराईयों को दर्शाया गया -
जैसे - परीक्षा में अच्छे अंक पाने के होड़ कालेजों में प्रवेश पाने की प्रतिस्पर्धा तथा छात्रों पर परिवार की आकाक्षांओं को पूरा पूरा करने का दबाव आदि

→ फिल्म पैड मैन द्वारा गावो, देहातों रूढिवादी परिवारों का महिलाओं को होने वाली बिमारियों के प्रति सचेत किया गया।
वही फिल्म मिशन मंगल तथा उरि जैसी फिल्मों से देश की सफलताओं और पक्षयों को दिखाया जो जनता में गौरव पूर्ण एहसास भर देती है।

→ कुछ सत्य घटनाओं पर आधारित फिल्में
जैसे - तलवार, बाटला, हाउस आदि में देश के सामने घटनाओं के हर पहलु को रखा।

→ बायोग्राफी फिल्म मैरीकॉम MS.धोनीभाग - मिल्खा - भाग मनिकर्णिका गोल्ड सुपर - 30 आदि ने लोगों को प्रेरणा देने का काम किया है।

दिनांक .....

(3)

## Rall of Media —

Media - मिडिया भारतीय लोक तान्त्रिक व्यवस्था में चौथा स्तम्भ माना जाता है। व्यापक अर्थो में मिडिया विशाल जन समूह तक सूचना शिक्षा मनोरंजन पहुँचाने का प्रभावशाली माध्यम है। यह संचार का सरल एंव बहु आयामी माध्यम है। मिडिया समाज के सभी पहलुओं को राजनैतिक, शैक्षिक एंव आर्थिक रूप से प्रभावित करता है। किसी देश की मिडिया को उस देश का दर्पण कहा जाता है, मिडिया राष्ट्र अन्तः करण का रक्षक एंव विकास की अभिव्यक्ति है देश में शुद्ध निस्पक्ष और रचनात्मक मिडिया की मौजूदगी सम्पूर्ण समाज लगन एंव वृद्ध व्यवसाय और उत्पादन ग्रहों निजि क्षेत्रों तथा सार्वजनिक क्षेत्रों की विविध आवश्यक्ताओं को पूरा करने के लिये महत्वपूर्ण है।

तकनीकी के विकास से पहले मिडिया शब्द का प्रयोग केवल किताबों, समाचार पत्रों, जिसे हम प्रिन्ट मिडिया के रूप में जानते है, के लिये होता था। परन्तु अब टेलीविजन, फिल्में, रेडियो तथा इन्टर नेट आदि भी मिडिया के प्रमुख अंग बन गये है। पहले जब मिडिया के यह सभी साधन नही थे लोग साहित्य एंव लेखन द्वारा ही अपने विचारों को प्रकट किया करते थे।

भारत के आजादी के लिये चलाये जा रहे आन्दोलनों को सफल बनाने के लिये प्रिन्ट मिडिया का प्रयोग होता है।

दिनांक .....

(4)

इस तरह भारत की स्वतन्त्रता में मिडिया का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा आज का मिडिया हमारे समाज को नया आकार प्रदान करने तथा इसको मजबूत बनाने में अपनी एक सशक्त एंव महत्वपूर्ण भूमिका भूमिका निभा रहा है, मिडिया लोगों के मनोरंजन के लिये एक बेहतरीन साधन है।

आज हम मीडिया द्वारा किसी देश के किसी कोने में बैठकर दुनिया के किसी कोने में घटित हुई घटना को टीवी या रेडियो के माध्यम से बडी आसानी से देख या सुन सकते है। इसके साथ भी शोसल मिडिया भी हमें हर तरह की खबरो से अवगत कराता है।

पहले लोग अपनों से दूर रह-रहे मित्रों एंव रिश्तेदारों से बात करने के लिये टेलीग्राम एंव पत्र लेखन का सहारा लेते थे जिसमें पत्र मिलने एंव उसका जवाब भेजने में काफी समय लगता था, परन्तु आज फेसबुक, वाटसप, इंस्टाग्राम और यूट्यूब आदि जैसे शोस्व मिडिया का प्रयोग करके बड़ी आसानी से एक दूसरे से बातचीत कर सकते हैं।

दिनांक .....



## Study of regional Art, Music, Dance and theater.

भारत समृद्धि, संस्कृति और विरासत का देश है, संगीत, नित्य, गायन, कला, नाटक आदि हमारी संस्कृति का अभिन्य अंग है, प्रारम्भ में कला को धार्मिक संस्कृति एंव सामाजिक सुधार आन्दोलन में प्रयोग किया जाता है इसका पूसार करने तथा लोकप्रिय बनाने के लिये इसमें संगीत व नृत्य को शामिल किया गया वैदिक युग से मध्य युग तक कला प्रदर्शन जनता की शिक्षा का प्रमुख स्त्रोत है। वर्तमान समय में यह व्यवसायिक रूप में तथा मनोरंजन के साधन के रूप में विश्व प्रसिद्ध हो गये हैं।

**कला या आर्ट** — कला या आर्ट शब्द इतना व्यापक है, कि विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएं केवल एक विशेष पक्ष को छू कर रह जाते हैं। कला का वास्तविक अर्थ अभि तक निश्चित नही हो पायी यद्यपि अभी तक इसकी अनेक परिभाषाएं हुई हैं। भारतीय परम्परा के अनुसार कला उन सारी क्रियाओं को कहते हैं, जिसमें कौशल अपेक्षित हो कला एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण है जिसमें शारिरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है।

मैथली शरण गुप्त के शब्दों में — आत्मी व्यक्ति की कुशल शक्ति ही तो कला है, अर्थात मन के अन्तःकरण की सुन्दर प्रस्तुति ही कला है।

## — क्षेत्रीय कला की विशेषताएँ —

1- भारतीय कला का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। भारतीय चित्रकारी के प्रारम्भिक उदाहरण प्रागैतिहासिक काल के है, जब मानव गुफाओं की दीवार पर चित्रकारी किया करता था।

2- भारतीय कला सांस्कृत प्रधान होने से धर्म प्रधान हो वास्तव में धर्म ही भारतीय कला प्राण है। भारतीय कला धार्मिक एवं अध्यात्मिक कलाओं से सदा अनुप्राणित रही है।
भारतीय कला को सामान्य जीवन की सच्ची दिग्दर्शिक कहा जाता है।

3- प्राचीन शिल्पियों और स्थापतियों ने अपना नाम और परिचय अधिकाशतः गुप्त रखा क्योंकि सृजन कर्ता के बजाय सृजन का महत्व दिया था। इसलिये अधिकांश कला कृतीया अनाम है।

4- भारतीय कला शास्वत सत्य का प्रतीक है। क्योंकि सत्यता, शिवम, सुन्दरम की भावना से युक्त होने के कारण उसमे नित्य नवीनता दिखती है।

5- भारतीय कला में परम्परा का सर्वत समान हुआ है। किन्तु किसी भी काल अन्धा अनुकरण को परिश्रेय नहीं दिया गया।

दिनांक .....



6— भारतीय कला में बाह्य सौन्दर्य के साथ-साथ आन्तरिक सौन्दर्य के भाव की प्रधानता है।

7— भारतीय कला के अन्य विशेषताओं में प्रतीक आत्मकथा का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

8— भारतीय कला, भारतीय सांस्कृति संद्दवाहिका नहीं है।

## —कुछ प्रमुख कलाएँ—

1—मधुबनी चित्रकला यह योजना गोधना, मैथली और चैत्र चित्रकला के रूप में जाना जाता है। इस लोक कला की उत्पाति बिहार के मधुबनी में हुआ और मिथला के गाँव में हुई।

2— कलम कारी पेन्टिंग— चित्रकला की यह शैली मुगल शासन में विकासित हुई इसे गोल कुण्डा सल्तनत द्वारा संरक्षण दिया गया था। भारत में इसकी उत्पाति आन्ध्र प्रदेश के दो प्राचीन शहरों मसुली पट्टम और श्री काल हस्ती में हुई

3— फड़ पेन्टिंग— फड़ चित्रकला राजस्थान की जीवन भारतीय लोक कला है। उनके पास बहुत ही अनोखी शैली है।

4 — पाटा पेन्टिंग —

पाटा पेन्टिंग या पट चित्र एक भक्ति कला है, 'भगवान जगतनाथ'की पूजा करती है। जो उड़ीसा राज्य से उत्पन्न हुई।

5 — वारली कला —

भारत की सबसे लोकप्रिय लोक-कलाओं मे से एक वारली पेंटिंग की न्युनतम कला है, वारली शब्द वारला से आया है। जिसका अर्थ है, भूमि का टुकड़ा वारली एक अनुसूचित जन जाति से उत्पन्न कला है।

6 — संगीत —

भारतीय संगीत प्राचीन काल से भारत में सुना और विकसित होता संगीत है।
इस संगीत का प्रारम्भ वैदिक काल से भी पुर्व का है, इस संगीत का मूल स्रोत वेदो को माना जाता है।
हिन्दु परम्परा में ऐसा मानना है कि ब्रह्मा ने भारत के नारद भूमि मुनि को संगीत वरदान में दिया था। धार्मिक एव सामाजिक परम्पराओं में संगीत का प्रचलन प्राचीन काल से रहा है। भारत वर्ष की सारी सभ्यताओं में संगीत का सबसे बड़ा महत्व रहा है।
वैदिक काल में समवेद के मन्त्रों का उपचारण उस समय के वैदिक सप्तक या सवागान के अनुसार सात स्वरों के प्रयोग के साथ किया जाता है।

## — भारतीय संगीत में सात शुद्ध स्वर —

षडज → सा

ऋषभ → रे

गंधार → ग

माध्यम → म

पंचम → प

धैवत → ध

निषाद → नि

## — भारतीय संगीत के प्रकार —

भारतीय संगीत के तीन प्रकार हैं।
शास्त्री संगीत
उपशास्त्री संगीत
सुगम संगीत

दिनांक .....



शास्त्री संगीत की दो प्रमुख पद्धितिय है —

हिन्दुस्तानी संगीत
कर्नाटिक संगीत

उप- शास्त्री संगीत में निम्न आते हैं —

ठुमरी
ठुम्पा
होरी
दादरा
कजरी
चयती आदि।

सुगम संगीत में निम्न आते हैं —

भजन
भारतीय फिल्म संगीत
गजल
लोक संगीत आदि।

नृत्य —

नृत्य मानवीय अभिव्यक्तियों का एक रस मय प्रदर्शन है, यह एक सार्वभौम्य कला है जिसका जन्म मानव जीवन के साथ हुआ।
बालक जन्म लेते ही रोकर अपने हाथ, पैर, मारकर अपनी भावाव्यक्त करता है। इन्ही आंगिक क्रियाओं से नृत्य की उत्पत्ति हुई।

→ भारतीय सांस्कृतिक एंव धर्म की आरम्भ से ही मुख्यतः नृत्य कला से जुड़े रहे हैं।
भारतीय सांस्कृतिक एंव धर्म आरम्भ से ही मुख्यता नृत्य कला से जुड़े हुये है।
दीवेन्द्र, इन्द्र का अच्छा नाटक होना, विश्वामित्र मेनका का उदाहरण भगवान शंकर का नटराज कहलाना तथा विश्व का नटवर कृष्ण कहलाना आदि, इतिहास के कई ऐसे प्रमाण है।
जिससे सकल कलाओं में नृत्य कला की विशेषता सर्वमान्य प्रतीत होती है।

→ भारतीय नृत्य उतने ही विविध है, जितनी हमारी संस्कृति इन्हीं दो भागों में जा सकता है।
शास्त्री नृत्य तथा लोक नृत्य।

## — प्रमुख भारतीय नृत्य —

कथक , उड़िसा , भारत, नाट्यम , कुची पुड़ी, मड़ी पुड़ी, कथककली ।

रंग मंच (Theater)—

वह स्थान है, जहाँ नृत्य नाटक आदि हो रंगमंच शब्द रंग और मंच दो शब्दों से मिलकर बना है।
रंग इसलिये प्रयुक्त होता क्योंकि दृश्य को आकर्षक बनाने के लिये दिवारों, छतो और पर्दों पर विविध प्रकार के चित्रकारी की जाती है। और अभिनेताओं की वेश - भूषा तथा साज- सज्जा में भी विविध रंगो का प्रयोग होता है।
इसलिये मंच प्रयुक्त होता है, कि दर्शकों की सुविधा के लिये रंगमंच का तल फर्श से कुछ ऊँचा रहता है।
दर्शकों के बैठने के स्थान को प्रेक्षागार और रंगमंच सहित समुच्य भवन को प्रेक्षागार कहते हैं।

पश्चिम रंगशाला या नाट्य शाला कहते हैं।
पाश्चिमी में इसे थियेटर नाम दिया जाता है।
ऐसा समझा जाता है, भारत में क्षेत्रीय रंगमंच भारतीय राज्यों की सभी क्षेत्रीय स्वाद को समाहित करता है।
भारतीय रंगमंच के बीच भारत के काव्य अभिव्यक्तित्व के बहुहासी पहलु को देशभर के लोगों द्वारा काफी सराहा गया ।